एस.एस. कॉलेज, जहानाबाद।

विभाग - हिन्दी

विषय - 'चन्द्रगुप्त' नाटक

वर्ग - स्नातक प्रतिष्ठा, भाग - 1.

शिक्षण - व्हाट्स-एप

समय - 11 बजे से 11 बजे तक 13.8.2020

शिक्षक - डॉ. रमेश शर्मा

पाठ - अभिनेयता

प्रिय छात्र-छात्राओं!

कल की कक्षा में हमलोग विचार कर रहे थे कि 'चन्द्रगुप्त' नाटक की अभिनेयता प्रश्नों के घेरे में है। डॉ. बच्चन सिंह ने प्रसाद जी के नाटकों की अभिनेयता को लेकर कुछ ऐसे सवाल उठा दिये कि प्रसाद जी के नाटकों का साहित्यिक मूल्य है इसलिए रंगमंचीय संबंध नाटक का अनिवार्य नहीं है। छात्रों! साहित्य से तात्पर्य पूर्व में काव्य से ही था जिसके दो भाग थे दृश्य काव्य और श्रव्य काव्य। इन दोनों काव्यों में कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि दृश्य काव्य ही सर्वश्रेष्ठ काव्य की कोटि में रहा है। दृश्य काव्य के अन्तर्गत ही नाटक आता है। ऐसे में पता नहीं चलता है नाटक के साहित्यिक मूल्य से क्या तात्पर्य? साहित्यिक मूल्य तो कविता, उपन्यास कहानियों के भी होते हैं — तो क्या नाटक या अन्य दृश्य काव्य का जैसा सामान्य और विशेष जनों के लिए प्रभावशाली भूमिका होती है वैसी भूमिका कविता या अन्य श्रव्य काव्यों की होती है।

रंगमंचीय दृष्टि से असफलता तो [illegible] ही नहीं सिद्ध होने देगा। आँखों देखी घटनाओं [अन्य?] और सुनी हुई घटनाओं में बहुत बड़ा फर्क है, इसे

समझना चाहिए। दृश्य काव्य की प्रभावोत्पादकता का ला आनन्द ले सकता है। दृश्य-काव्य के सामने हजारों-लाखों दर्शक एक साथ काव्य की वस्तु-स्थिति से प्रभावित होते हैं। दुःख की घड़ी में एक साथ रोते हैं तथा सुख की घड़ी में हँसते हैं। बच्चन सिंह जी की बात मानी जाए तो नाटक भी पाठ्य होकर रह जाएगा।

अब सवाल 'चन्द्रगुप्त' नाटक की अभिनेयता का। जैसा कि कथानक के तत्वों के विश्लेषण प्रकरण में भी चर्चा हुई थी इस नाटक की रंगमंचीय असफलता की जड़ कथानक की बुनावट में है। जयशंकर प्रसाद जी की प्रवृत्तिगत गुण-दोष के कारण ऐसा हुआ है। उनकी कथानक की बुनावट की बहुप्रचलित शैली रही है — एक कथा में अनेक प्रासंगिक कथा का संगुफन। इस नाटक में भारतीय राष्ट्रीयता की मूल धारा प्रवाहित होती रही है, पर इतने अन्य कथाएँ जोड़ दी गई हैं कि कथानक अनावश्यक विस्तार के साथ बोझिल हो जाता है। निर्देशक को इस नाटक के प्रस्तुतीकरण के लिए अनेक घटनाओं को छाँटना होगा, अन्यथा समय की सीमा (तीन-चार घंटे) में नाटक दिखलाए ही नहीं जा सकते प्रभावोत्पादकता और रस निष्पत्ति की बात तो दूर की कौड़ी है। गीतों की योजना में भी नाटककार असफल हुए हैं। नाटकीय दृष्टि से अनावश्यक गीतों की भरमार है। दो-तीन गीतों को छोड़कर अन्य गीत तो गीत नहीं; कविताएँ हैं। यह कवि प्रसाद का प्रभाव निदर्शित करता है। अब सामान्य और अपढ़ दर्शक के सामने आप कविता परोसिएगा तो क्या होगा? स्वतः अंदाजा लगाया जा सकता है। शेष अगली कक्षा में।

सीमा शर्मा
13.8.2020